आनाह

Dr. Pratiksha Sharma
Assistant Prof.
Department of Kaya chikitsa

MyFreePPT

- आनाह(constipation)-

"आमं शकृद्वा निचितं क्रमेण भूयो विबद्धं विगुणानिलेन
प्रवर्तमानं न यथास्वमेनं विकारमानाहमुदाहरन्ति ||"
(सु.उ.56/20)

- ✓ वायु की विगुणता से आमाशय मे अपक्व अन्न रस का निष्क्रिय संचय होना
- ✓ विगुणित वायु से अवरुद्ध होकर पुरीष का नहीं निकलना
- ✓ उद्गार एवं अधोवायु के रूप में वायु का न निकल पाना

अर्थात् अपानवायु द्वारा उद्गार एवं मल प्रवृत्ति का अवरोध ही आनाह है |

MyFreePPT

- निरुक्ति/ व्युत्पत्ति-

"आ समन्तात् नह्यते बाध्यते अवरूध्यते वा मलस्य वायोश्चमार्गों यस्मिन् रोगे स आनाह: |"

(मधुकोश)

मल एवं वायु का वात की विगुणता से स्वमार्गों से न निकल पाना |

MyFreePPT

- निदान

1. 13 प्रकार के वेगों का धारण करना
2. कटु- तिक्त- कषाय रस प्रधान द्रव्यों का सेवन
3. रुक्षान्न सेवन
4. शारीरिक श्रम नहीं करना, निरंतर बैठे रहना

MyFreePPT

- संप्राप्ति –

निदान सेवन

↓

वात प्रकोप

↓

पक्वाशय में पुरीष तथा ऊर्ध्ववायु व अधोवायु का वात द्वारा अवरोध

↓

पुरीष, उद्गार व अधोवायु की अप्रवृत्ति

↓

आनाह

MyFreePPT

- संप्राप्ति घटक –

दोष - वात(अपान वात)

दूष्य - अपक्व अन्न, रस, पुरीष

स्त्रोतस् – अन्नवह, पुरीषवह

अधिष्ठान – आमाशय, पक्वाशय

स्त्रोतोंदुष्टि – विमार्गमन, संग

अग्नि – मंद

स्वभाव – आशुकरी

साध्यसाध्यता – साध्य

MyFreePPT

भेद

आमज

पुरीषज

MyFreePPT

- सामान्य लक्षण –

1. हृदय स्तम्भ
2. शिरोरोग
3. गात्र- गौरव
4. पीनस
5. उद्गार अवरोध
6. उदर स्तब्धता
7. अविपाक
8. बैचेनी

MyFreePPT

- आमज आनाह पुरीषज आनाह

1. तृष्णा	1. कटि-पृष्ठ की स्तब्धता
2. प्रतिश्याय	2. मल- मूत्र अवरोध
3. शिरोदाह	3. शूल
4. आमाशय में शूल	4. मूर्च्छा
5. गात्र गौरव	5. पुरीष- वमन
6. हृद- स्तम्भ	6. श्वासकृच्छ्रता
7. उद्गार- विघात	7. अलसक

MyFreePPT

- चिकित्सा सिद्धांत –

1. आमदोष तथा अपक्व अन्न रस जनित आनाह - वमन कर्म |
2. वमन पश्चात् दीपनीय औषधियों से सिद्ध पेया, विलेपी, यवागु |
3. संशमन चिकित्सा के पूर्व आमज आनाह के रोगी में स्वेदन, अभ्यंग आदि का प्रयोग कर वायु का अनुलोमन करना चाहिए |
4. पुरीषज आनाह – वातानुलोमन
5. मुख मार्ग से पुरीष आने पर उसकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिए |

MyFreePPT

- 6. पुरीषज आनाह में स्वेदन, अभ्यंग, अंजन, नस्य, पाचन औषध प्रयोग, फलवर्ति एवं विरेचन देना चाहिए |

7. रोगी के उदर प्रदेश पर स्वेदन करना चाहिए |

चिकित्सा-

संशोधन एवं संशमन

1. स्नेहन, स्वेदन, अभ्यंग
2. वमन कर्म – आमज
3. विरेचन कर्म, आस्थापन बस्ति – पुरीषज
4. नस्य

MyFreePPT

- संशमन चिकित्सा –

रस, भस्म, पिष्टी	इच्छाभेदी रस शंख भस्म नाराच रस	125-250 mg कोष्ण जल/ मधु
वटी	लशुनादि वटी हिंगवादी वटी आरोग्यवर्धिनी वटी गंधक वटी अर्क वटी	250-500 mg कोष्ण जल से
चूर्ण	पंचसकार हरितक्यादी त्रिफला सुखविरेचन	3-6 gm उष्ण जल
घृत/ तैल	एरंड तैल	15-20ml दूध/ उष्ण जल

MyFreePPT

Thank You

MyFreePPT